शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2014

सूक्ष्म शिक्षण की महत्ता एवं अनुप्रयोग : एक अध्ययन

डॉ. लक्ष्मण शिंदे, उपाचार्य
श्रीमती बबीता वर्मा, शोधार्थी
शिक्षा अध्ययनशाला,
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावशील शिक्षण हमेशा से ही चुनौती रहा है। इसके लिए अध्यापन में विभिन्न प्रकार के शिक्षण कौशलों का विकास होता रहा है। एक शिक्षक के सामने अपने विद्यार्थी को गुणात्मक स्तर की शिक्षा प्रदान करने के अतिरिक्त और कोई लक्ष्य नहीं होता। शिक्षक के सामने प्रश्न यही होता है कि वह अपने विचार विद्यार्थी तक किस माध्यम से संप्रेषित करे। प्रस्तुत शोध पत्र में शिक्षण क्षेत्र में प्रचलित सूक्ष्म शिक्षण के महत्व और उसके अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन काल से लेकर आज तक शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयोग हुए हैं। शिक्षा जन-जन तक पहुंचे व जीवन के लिए उपयोगी हो, इस बात को ध्यान में रखते हुए समय-समय पर शिक्षाविदों ने अपने विचारों से शिक्षा जगत को अवगत कराया है। शिक्षा के स्वरुप और बालक की अवस्था के अनुरूप शिक्षण के विषय में शिक्षा शास्त्रियों ने अपना चिंतन प्रस्तुत किया है। शिक्षा का चाहे जो भी स्वरूप रहे किन्तु उस शिक्षा को विद्यार्थियों तक पहुंचाने का माध्यम शिक्षक ही रहता है। अतः शिक्षक किस तरह पाठ्य सामग्री छात्रों तक पहुंचाए, शिक्षण हेतु किस विधि/प्रविधि का प्रयोग करे यह प्रमुख मुद्दा है।

एक अध्यापक को प्रत्येक विद्यार्थी के साथ इस प्रकार आत्मसात हो जाना चाहिए कि वह विद्यार्थी की आँखों से ही देखे और उसी के मस्तिष्क से सुने। यह प्रभावशाली शिक्षण द्वारा ही संभव है। शिक्षा की गुणात्मक उन्नति मूल रूप से शिक्षण के स्तर पर ही निर्भर करती है। वर्तमान समय में आधुनिकीकरण पर बल दिया जा रहा है, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि आध्यत्मिक मूल्यों को समाप्त कर दिया जाये। वर्तमान समाज प्रगतिशील है। प्रत्येक क्षण महत्वपूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं। देखते ही देखते परमाणु- युग से उपग्रह-युग एवं इंटरनेट-युग आ चुका है। मनुष्य की भौतिक, सामाजिक, मानवीय आर्थिक आदि- आवश्यकताओं में अचानक वृद्धि हुई है। अतः प्राचीन ढ़ाँचे के स्थान पर नवीन ढ़ाँचे के निर्माण की आवश्यकता है।

अध्यापक शिक्षा वह शैक्षिक आयोजन है, जिसमें विभिन्न स्तरीय एवं वर्गीय अध्यापकों को शिक्षित करने के लिए प्रयत्न किया जाता है, जिससे भावी पीढ़ी को ज्ञान एवं मूल्यों का हस्तांतरण कर सके। साथ ही वे शैक्षिक एवं विकासात्मक दायित्वों को ग्रहण एवं वहन करने में भी सक्षम हो सकें। उनमें तकनीकी कुशलता, वैज्ञानिक चेतना, संसाधन सम्पन्नता तथा नवाचार के साथ संस्कृति एवं मानवता बोध का समन्वयात्मक विकास करना सम्भव हो सके। विभिन्न शिक्षण दक्षताओं की प्राप्ति हेतु आज अध्यापक शिक्षा की महती आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्यापक-शिक्षा

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2014

की आवश्यकता को निम्न बिन्दुओं के आधार पर भी स्पष्ट किया जा सकता है-

उद्यमत आवश्यकताएँ- अध्यापन सम्बन्धी कौशल, प्रतिमान, तकनीकी, विधि, सम्प्रेषण तकनीकी, अभिक्षमता, अभिवृत्ति, उत्तरदायित्व आदि को अनुकूल ढ़ंग से विकसित करने के लिए भी अध्यापक शिक्षा को ग्रहण करना जरूरी हो जाता है। आज हम अध्यापन को एक उद्यम का स्थान दे चुके हैं। ऐसी स्थिति में उद्यम सम्बन्धी दक्षता, कुशलता एवं योग्यताओं को ग्रहण किए बिना कोई भी व्यक्ति, एक सफल अध्यापन उद्यमी नहीं बन सकता।

शैक्षिक आवश्यकताएँ- आज वैज्ञानिक खोज एवं तकनीकी खोज के क्षेत्र में नित्य नवीन प्रगति होने के कारण ज्ञान का विस्तार हो रहा है। जहाँ एक ओर कुशल एवं तकनीकी दक्षता प्राप्त शिक्षक की आवश्यकता महसूस की जा रही है, वहीं अधिगमकर्ताओं की संख्या में वृद्धि हो रही है और अध्यापक के सम्मुख नित्य नवीन, जटिल, एवं विचित्र शिक्षण अधिगम परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं। अतः शैक्षिक दृष्टि के अनुरूप शिक्षण दक्षता की प्राप्ति अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से ही सम्भव हो सकती है।

मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ- आज अध्यापक केवल छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए ही जिम्मेदार नहीं माने जाते, बल्कि उन पर उनके सर्वांगीण विकास का दायित्व भी होता है। अधिगमनकर्ता की रूचि, अभिवृत्ति, आकांक्षा, आवश्यकता, अभिक्षमता, बौद्धिक योग्यता, व्यक्तित्व भिन्नता आदि के परिप्रेक्ष्य में अन्तर्निहित क्षमताओं का पूर्ण विकास भी सम्भव हो सके इसके लिए स्पष्ट है कि आज अध्यापक को अधिगमकर्ताओं को मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना होगा, अधिगम मनोविज्ञान को समझना होगा, शिक्षण एवं मनोविज्ञान को शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त करना सम्भव हो सकता है।

सामाजिक आवश्यकताएँ- शिक्षा को यदि समाजिकरण के उपकरण के रूप में देखा जाये, तो अध्यापक-प्रशिक्षण भी इससे अलग नहीं है। मानव सम्बन्ध को उत्तम बनाकर ही मानवीय सभ्यता और संस्कृति की रक्षा की जा सकती है। सामाजिक मूल्यों के संवर्द्धन हेतु अध्यापक ही जिम्मेदार होते हैं। ऐसी स्थिति में समाज को भी शिक्षकीय मर्यादा की रक्षा करनी होती है।

समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में शिक्षक की महती भूमिका है। उत्तम नागरिक के निर्माण का कार्य विद्यालय स्तर पर ही प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रजातान्त्रिक गुण तथा मूल्यों को विकसित करने के लिए कर्तव्य-भावना, समानता और स्वतन्त्रता की भावना को स्पष्ट करने का दायित्व, राष्ट्रीय एकता एवम अखण्डता, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना, साम्प्रदायिक साम्य, मानवता सम्बन्धी गुण, सहयोगात्मक आत्मनिर्भरता आदि को पल्लवित करने की क्षमता को विकसित करने के लिए शिक्षा अध्यापक शिक्षा एवं समाज के मध्य सहयोगात्मक समन्वय की आवश्यकता है।

आर्थिक आवश्यकताएँ- आज भौतिक एवं मानवीय दोनों ही वर्गों के संसाधनों की हमारे देश में कमी महसूस की जा रही है। जनसंख्या में निरन्तर वृद्धि से हमारी आवश्यकताएँ भी बढ़ रही हैं। इनका समुचित उपयोग करने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है। आधुनिक प्रयोगशालाओं में उपलब्ध उपकरणों का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना, अध्यापक के लिए आवश्यक माना जाता है।

दार्शनिक आवश्यकताएँ - विचार, मान्यता एवम् आदर्श आदि के मान्य s स्वरूप को ही दर्शन कहा जाता है, जिसके अनुसार व्यक्ति समाज कार्य करने के लिए प्रयास करता है। भावी अध्यापक/अध्यापिकाएँ कौन हों, उन्हें कैसी शिक्षा दी जाये, उनकी योग्यताएँ क्या हों तथा उनमें किस वर्ग के कौशल, ज्ञान तथा व्यवहार प्रारूप

को विकसित करने का प्रयास किया जाय, आदि बातों का निर्धारण दर्शन ही करता है। सत्य, धर्म, निष्ठा, न्याय, वंचितों के उन्नयन के प्रति आग्रह, आशावादी, विश्वास एवं श्रेष्ठता हेतु परिवर्तन के लिए प्रयास करने की इच्छा एवम् क्षमता आदि गुणों से सम्पन्न बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति ही एक सफल अध्यापक एवं अध्यापिका के रूप में स्थापित हो सकते हैं। इन मानदंडों का निर्धारण भी दार्शनिक दृष्टिकोण से ही किया जाता है।

शिक्षक प्रशिक्षण

कालेज और शिक्षण संस्थाओं की आज की स्थिति बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ में दुःखद रूप से अपर्याप्त है। किसी प्रशिक्षण कार्यक्रम की न्यूनतम आवश्यकता यह है कि प्रशिक्षणार्थियों को एक अच्छे अध्यापक के बुनियादी कौशलों और उसकी क्षमताओं को प्राप्त करने में समर्थ बनाना चाहिए। भिन्न-भिन्न योग्यताओं वाले विद्यार्थियों की कक्षा को सम्भालने की क्षमता, शिक्षण को प्रभावकारी बनाने के लिए उपलब्ध प्रौद्योगिकी का उपयोग करना तर्क संगत रूप से और स्पष्टता के साथ विचारों का आदान प्रदान करना, कक्षा के बाहर अनुभव प्राप्त करना और समाज के साथ काम करने में सहायता प्रदान करना, यह भी अत्यावश्यक है।

अध्यापकों का कार्य निष्पादन शिक्षा के क्षेत्र में सर्वाधिक निर्णायक तत्व है । चाहे जो भी नीति निर्धारित की जाए, अन्ततः उन्हें अध्यापक ही अमल में लायेंगे। हम शिक्षण में क्रान्ति लाने की संभावना वाली नई प्रौद्योगिकियों के विकास की दहलीज पर खडे हैं, किन्तु दुर्भाग्यवश अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या को अद्यतन बनाने की प्रक्रिया बड़ी धीमी रही है। अध्यापक प्रशिक्षण का आयोजन व गठन जिज्ञासा की भावना, पहल करने की भावना, वैज्ञानिक मिजाज, हस्तकौशल, प्रभावकारी रूप से बोलने और लिखने के लिए संकल्पनात्मक स्पष्टता और भाषाई कौशलों का विकास करना, अध्यापकों से अपने विद्यार्थियों को इन बातों की शिक्षा प्रदान की जाने की अपेक्षा की जाती है । प्रशिक्षण कार्यक्रम में आधुनिक सहायक शिक्षण साधनों का उपयोग प्रारम्भ करने का स्वागत करने की भावना विकसित करने की व्यवस्था करने की अपेक्षा की जाती है।

सूक्ष्म शिक्षण का इतिहास

सन् 1961 में अमेरिका के स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में शोधार्थी कीथ एचीसन ने समाचार पत्र में एक जर्मन वैज्ञानिक द्वारा छोटे विडियो टेप के आविष्कार का समाचार पढ़ा । एचीसन उस समय डॉ.राबर्ट एन.बुश और डब्ल्यू. एलन के साथ कार्यरत थे, जिन्हें फोर्ड फाउण्डेशन से अनुदान मिला था कि वे खोज करें कि छात्राध्यापकों के लिए नवाचारी अध्यापन शिक्षा कार्यक्रम में कौन से अनुभव वांछित होंगें जिनसे उनमें अपने अध्यापन कार्यो को सुचारू रूप से करने की क्षमता उत्पन्न होगी।

एचीसन का मत था कि यदि छात्राध्यापको द्वारा पढ़ाये पाठ को वीडियो टेप रिकार्डर के सहारे उसे दिखाया जा सके कि उसने क्या किया है, तो प्रतिपुष्टि बहुत ही प्रभावी होगी। प्रोफेसर बुश और एलन ने इस सुझाव का स्वागत किया। एचीसन और स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय के उसके अन्य सहयोगी विडियो टेप रिकार्डर से विभिन्न प्रकार के प्रयोग करने में लग गये। उन्होंने छात्राध्यापकों को अध्यापन व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने व प्रशिक्षण के निश्चित उद्देश्यों की सम्पूर्ति हेतु इसका प्रयोग किया। स्टेनफोर्ड से कुछ दूरी पर स्थित स्कूलों में जिन छात्राध्यपकों को भेजा गया वे अपने पढ़ाये पाठ की वीडियो टेप स्टेनफोर्ड भेजते थे, जहां प्राध्यापक और शोध उपाधि प्रत्याशी उनकी विवेचना करते। वह टेप विवेचना के साथ छात्राध्यपकों को लौटा दी जाती थी। वे इस आलोचना के सहारे अपने अध्यापन में गुणात्मक सुधार लाने का प्रयास करते थे।

सूक्ष्म शिक्षण का अर्थ

सूक्ष्म शिक्षण कक्षा में पढ़ाने का प्रशिक्षण देने की अभिनव प्रक्रिया एवं प्रयोग है। सूक्ष्म शिक्षण प्रविधि के अन्तर्गत कक्षा शिक्षण की समस्त जटिलताओं को प्राप्त कर शिक्षण कुशलता व्यवहार में परिवर्तन एवं सुधार के प्रयास किये जाते हैं। शिक्षण कुशलता लाने हेतु प्रतिपुष्टि एवं सुझाव का प्रयोग किया जाता है। सूक्ष्म शिक्षण में वास्तविक अभ्यास क्रिया आयोजित की जाती है। इस अभ्यास क्रिया में अभिरुपण की स्थिति में छात्र अध्यापक/छात्र अध्यापिकाओं द्वारा भूमिका निर्वाह कराई जाती है। कक्षा विषय वस्तु कौशल का ध्यान रखा जाता है। अध्यापन प्रक्रिया नियंत्रित होने से इच्छानुसार परिवर्तन किया जा सकता है ।

इस प्रकार सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास चक्र के अन्तर्गत समस्त कक्षा की जटिलताओं को दूर कर दिया जाता है । कम समय, कम क्रिया कम विद्यार्थियों के सहयोग से बार बार अभ्यास कर शीघ्रता से शिक्षण कार्यो में दक्षता प्राप्त की जाती है। पर्यवेक्षक ही पूरे समय पीछे बैठकर कौशल सुधार हेतु उचित एवं सकारात्मक प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं ।

सूक्ष्म शिक्षण की विशेषताएँ

-यह शिक्षण क्रियाओं में दक्षता प्राप्ति की एक नवीन प्रविधि है।

-सूक्ष्म शिक्षण में जटिलताएं समाप्त की जा सकती हैं।

-सूक्ष्म शिक्षण में एक समय में एक ही कौशल का अभ्यास किया जाता है।

-सूक्ष्म शिक्षण वास्तविक विद्यार्थी तथा अन्य छात्र अध्यापकों द्वारा भूमिका निर्वाह कर सम्पन्न किया जा सकता है।

-सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास एक चक्र के रूप में किया जाता है।

-सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास में एक कार्य, क्रिया, का समय 7 से 10 मिनिट है।

-सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास में पाठ योजना भी सूक्ष्म बनाई जाती है।

-सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास में छोटे समूह (7 से 10) बनाकर सभी विद्यार्थी शिक्षक पर्यवेक्षक एवं विद्यार्थी की भूमिका निभाते हैं।

-प्रत्येक पर्यवेक्षक सकारात्मक प्रतिपुष्टि देता है।

-सूक्ष्म शिक्षण वास्तविक शिक्षण है।

सूक्ष्म शिक्षण परिभाषाएँ

ऐलेन (1963) के अनुसार "सूक्ष्म शिक्षण प्रशिक्षण से संबंधित तकनीक है, जिसका प्रयोग शिक्षकों की जटिलताओं को कम करने का प्रयास है।"

बी.के. पासी (1976) के अनुसार, "सूक्ष्म शिक्षण एक प्रशिक्षण विधि है जिसमें छात्राध्यापक एक शिक्षण कौशल को थोड़ी अवधि के लिए छोटे समूह को कोई एक सम्प्रत्यय पढ़ाता है।"

एल.सी.सिंह(1982) के अनुसार, "सूक्ष्म शिक्षण, शिक्षण का वह सरलीकृत लघु रूप है जिसमें किसी अध्यापक द्वारा किन्ही पांच विद्यार्थियों के समूह को 5-20 मिनिट तक की अल्प अवधि में पाठ्यक्रम की एक छोटी इकाई का शिक्षण प्रदान किया जाता है। इस प्रकार की परिस्थिति किसी अनुभवी अथवा अनुभवहीन अध्यापक को नवीन शिक्षण कौशलों का अर्जन करने और पूर्व अर्जित कौशलों में सुधार लाने के लिए अवसर प्रदान करती है।"

सूक्ष्म शिक्षण : एक पुनरावलोकन

पासी और शाह (1973) ने बी.एड. विद्यार्थी शिक्षक के लिए सूक्ष्म शिक्षण कार्यक्रम प्रशिक्षण के तौर पर आयोजित किया। यह परीक्षण दोनों दशाओं, आभासी और वास्तविक दशा में स्कूल के विद्यार्थियों के साथ किया गया। इसके परिणाम थे-1) छात्र-अध्यापक में सूक्ष्म शिक्षण के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति प्रदर्शित की गई, 2) शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रम सूक्ष्म शिक्षण का क्रियान्वयन भारतीय संदर्भ में बिल्कुल स्पष्ट तौर पर व्यावहारिक अर्थात सम्भाव्य पाया गया।

देशपाण्डे और अन्य(1977) ने यह खोजने के लिए अध्ययन किया कि किस हद तक सूक्ष्म शिक्षण का उपयोग शिक्षक प्रशिक्षण संपूर्ण कार्यक्रम के लिए हो। इस शोध कार्य के लिए

करीब 145 अनुभवहीन शिक्षक-प्रशिक्षाणार्थियों और करीब 120 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को कार्यक्रम में शामिल किया। पहला शिक्षण अभ्यास पाठ प्रशिक्षणार्थियों द्वारा संचालित किया गया। उपचार के तत्काल बाद पश्च प्रशिक्षण पाठ लिया गया।

शिक्षक-प्रशिक्षणार्थियों और शिक्षक प्रशिक्षकों की प्रतिक्रियाएं : कार्यक्रम समाप्ति के पश्चात एक प्रतिक्रिया मापनी के द्वारा मालूम की गई। 1- सूक्ष्म शिक्षण कार्यक्रम प्रथम पाठाभ्यास अनुभवहीन और अनुभवी प्रशिक्षणार्थियों का निष्पादन बराबर पाया गया। 2-अधिकतर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने बताया कि सूक्ष्म शिक्षण के कारण उन्हें वास्तविकता का सामना करने में मदद मिली एवं उनका आत्मविश्वास बढ़ा। 3. सूक्ष्म शिक्षण के लिए शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण के लिए वास्तविक स्थिति को अधिक उपयुक्त माना ।

ललिथा (1977) ने प्रभावी कक्षा-कक्ष अनुदेशन के लिए कौशलों का विकास कर उनकी अनुसूची का निर्माण किया तथा कौशलों का क्रियान्वयन किया। शिक्षार्थी की सहभागिता को बढाने के कौशलों का विकास किया। व्याख्या कौशल, श्यामपटकार्य, अनुदेशात्मक उद्देश्य लेखन कौशल को सीखना आदि का विकास किया। प्रयोगात्मक तौर पर अनुदेशात्मक सामग्री का अध्ययन परीक्षण के तौर पर किया गया। सामग्री की प्रभाविता की तुलना सूक्ष्म शिक्षण के साथ परम्परागत शिक्षण के साथ एकरूपता का अध्ययन किया गया। अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि जिस प्रयोगात्मक समूह को अनुदेशात्मक सामग्री के साथ प्रशिक्षण दिया गया था, वह समूह परम्परागत प्रशिक्षण समूह की तुलना में अधिक श्रेष्ठ था।

पासी और अन्य (1977) ने भी कक्षा-कक्ष अनुदेशन के लिए कौशलों का निर्माण किया तथा कौशलों का क्रियान्वयन किया। शिक्षार्थी की सहभागिता को बढाने के लिए कौशलों का विकास किया। प्रस्तावना पाठ कौशल, समन्वयन कौशल, पुनर्बलन कौशल, प्रश्नों में प्रवाहता, खोजपूर्ण प्रश्न कौशल, उद्दीपन परिवर्तन कौशल, उदाहरण के साथ व्याख्या, मौन, अशाब्दिक, व्याख्या कड़ियॉ आदि को प्रमाणित किया।

पटेल (1978) ने छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता एवम् शिक्षण अभिवृत्ति पर, सूक्ष्म-शिक्षण की अभिरूपित परिस्थिति में प्रत्यक्षण प्रतिमान एवं सांकेतिक प्रतिमान के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के उद्देश्य थे- (1) छात्राध्यापकों की सामान्य शिक्षण दक्षता पर प्रत्यक्षण एवम् सांकेतिक प्रतिमान की प्रभाविता की तुलना करना; (2) प्रत्यक्षण एवम् सांकेतिक प्रतिमान के द्वारा प्रशिक्षित छात्राध्यापकों में सामान्य शिक्षण दक्षता के रिटेन्शन लेवल की तुलना करना। बोरसद (गुजरात) के 128 छात्राध्यापकों में से कला-संकाय के 20 पुरूष छात्राध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष थे- (1) सामान्य शिक्षण दक्षता के विकास में, सूक्ष्म-शिक्षण के साथ प्रत्यक्षण प्रतिमान एवम् सांकेतिक प्रतिमान के उपचार के मध्यमानों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। (2) प्रत्यक्षण एवम् सांकेतिक प्रतिमानों द्वारा प्रशिक्षित छात्राध्यापकों में सामान्य शिक्षण दक्षता के रिटेन्शन-लेवल के माध्यांकों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

पटेल (1978) ने प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण छोटे समूह को प्रशिक्षण महाविद्यालय के छात्राध्यापको की सामान्य शिक्षण दक्षता के विकास में शिक्षक प्रशिक्षण की सूक्ष्म शिक्षण एवं परम्परागत शिक्षण तकनीक के संबंध में प्रभाविता का अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था- परम्परागत शिक्षण तकनीकी द्वारा प्रशिक्षित एवं सूक्ष्म शिक्षण के चयनित कौशलों के विकास से प्रशिक्षित छात्राध्यापकों की सामान्य शिक्षण दक्षता की तुलना करना यादृच्छिक न्यादर्श चयन तकनीक का उपयोग कर, बोरसद के एमबी.एम प्राथमिक शिक्षण प्र.महा.के दो

प्रायोगिक समूहों में यादृछिक तकनीकी के द्वारा बाँटा गया। अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष था- सामान्य शिक्षण दक्षता के विकास में अभिरूपित परिस्थिति में दिया गया सूक्ष्म शिक्षण उपचार, परम्परागत शिक्षक प्रशिक्षण उपचार की तुलना में सार्थक रूप से उत्तम पाया गया।

शर्मा (1979) ने राजस्थान के प्रशिक्षण महाविद्यालय के बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षताओं के विकास का अध्ययन किया। इसके उद्देश्य थे (1) छात्राध्यापकों की उनकी दक्षताओं के सम्बन्ध में कक्षा कक्ष के व्यवहारगत तरीकों की पहचान करना। (2) छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षताओं के विकास में शिक्षण प्रशिक्षण के महत्व को जानना यादृछिक न्यादर्श तकनीक का उपयोग कर उदयपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर विश्वविद्यालय एंव राजस्थान विश्वविद्यालय के सम्बन्धित महाविद्यालयों से एक-एक महाविद्यालय का चयन किया, जिनमें पुनः यादृछिक न्यादर्श चयन द्वारा कुल 350 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष थे- (1) अध्ययन में पाँच शिक्षण दक्षता घटकों की पहचान की गई, ये थेः एकीकरण - प्रामाणिकता, विचार-विमर्श पर नियन्त्रण, उत्तरदायित्व विकास, नवोदित आकर्षण एंव छात्र व्यवहार, इन पाँचों घटकों में अन्तर्सम्बन्ध 0.01 स्तर पर उच्च धनात्मक रूप से सार्थक पाया गया। (2) कक्षा-कक्ष निरीक्षण अभिलेख के अनुसार अभ्यास शिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों की दक्षताओं का विकास सार्थक रूप से पाया गया। (3) शिक्षण अभ्यास के दौरान, छात्राध्यापकों की दक्षताओं का विकास, उनके शिक्षण अनुभवों, उम्र एवं सामाजिक आर्थिक स्तर से स्वतंत्र पाया गया। (4) शिक्षण अभ्यास के दौरान छात्राध्यापक की शिक्षण दक्षता के विकास पर, वैवाहिक स्थिति, लिंग, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के शिक्षण अनुभव, पूर्व प्रशिक्षण, नियंत्रित/स्वाध्यायी स्नातकीय शिक्षा एवं शिक्षण उपलब्धि का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

शाह(1979) ने प्रभावशाली प्रश्न कौशलता का विकास किया और स्वअनुदेशन बहुमाध्यम पेकेज विकसित किया जो संरक्षित प्रशिक्षणार्थी के लिए मददगार था, जो शिक्षक हाईस्कूलों में सेवारत थे। मल्टिमीडिया ने पैकेज को प्रस्तुत किया। इन संवेदनशील तंत्र जैसे, श्रव्य माध्यम, दृश्य-श्रव्य माध्यम, एवं दृश्य माध्यम, शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान स्वअनुदेशन, मल्टिमिडिया के प्रति प्रदर्शित किया गया और सुधार पाया गया।

ललीथा (1981) ने छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर, एकीकरण शिक्षण कौशल के लिए प्रशिक्षण की प्रभाविता का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था- छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता के पदों में, एकीकरण प्रशिक्षण के लिए, प्रायोगिक-आव्यूह (प्रायोगिक-उपचार) के साथ विशिष्टताहीन आव्यूह (नियंत्रित उपचार) के प्रभावों की तुलना करना न्यादर्श के रूप में शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय के 16 छात्राध्यापकों का चयन किया गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष थे : (1) शिक्षण दक्षता के पदों में, अनुरूपित परिस्थितियों में शिक्षण कौशलों के एकीकरण के लिए प्रयुक्त प्रशिक्षण के पश्चात दोनों उपचार समूहों के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया; (2) अनुरूपित परिस्थितियों में शिक्षण कौशलों के प्रशिक्षण के पश्चात, वास्तविक विद्यालयीन परिस्थितियों में शिक्षण दक्षता के पदों में प्रायोगिक समूह, नियन्त्रित समूह की तुलना में उत्तम रहा; (3) अनुरूपित परिस्थितियों में शिक्षण कौशलो के प्रशिक्षण के पश्चात् प्रायोगिक समूह के सामान्य शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों का मध्यमान नियन्त्रित समूह के शिक्षण दक्षता प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना में सार्थक उच्च पाया गया।

मुखोपाध्याय (1981) ने शिक्षण दक्षताआंे के विकास में, सूक्ष्म शिक्षण एवम् प्रमापीकृत उपागम के तुलनात्मक प्रभाव का अध्ययन

किया। इसके उद्देश्य थे- (1) सूक्ष्म-शिक्षण एवम् प्रमापीकृत उपागम द्वारा चयनित शिक्षण दक्षताओं के विकास का अध्ययन करना (2), चयनित शिक्षण दक्षताओं के विकास में सूक्ष्म-शिक्षण एवम् प्रमापीकृत उपागम के प्रभाविता की तुलना करना। न्यादर्श के रूप में, इन्जीनियरिंग डिप्लोमा एवम् बी.एससी./एस.एससी. उपाधि के 24 पूर्णकालीन शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को सम्मिलित किया गया। न्यादर्श हेतु यादृच्छिक न्यादर्श चयन तकनीक अपनाई गई। अध्ययन के निष्कर्ष थे- (1) सूक्ष्म शिक्षण समूह एवम् प्रमापीकृत उपागम समूह के वास्तविक प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 7.0 एवम् 5.6 प्राप्त हुआ; (2) दोनों ही उपचारों का प्रभाव समान पाया गया।

भट्टाचार्जी (1981) ने शिक्षण दक्षता के विकास में सूक्ष्म शिक्षण की प्रभावशीलता का अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की दक्षता पर, कुछ चयनित शिक्षण कौशलों के एकीकरण के प्रभाव का निरीक्षण करना। न्यादर्श के रूप में शिलांग के एक प्रशिक्षण महाविद्यालय के 20 बी.एड़ प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष था- शिक्षण दक्षता के विकास में नियन्त्रण समूह की तुलना में प्रायोगिक समूह के प्राप्तांक अधिक सार्थक पाये गये।

जंगीरा, सिंह एवं मट्टू (1981) ने शिक्षण की छात्र निष्पत्ति का सेवाकाल विज्ञान शिक्षकों की सामान्य शिक्षण दक्षता एवम् कौशल दक्षता पर सूक्ष्म- शिक्षण के द्वारा शिक्षण कौशलों में प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे- (1) विज्ञान शिक्षकों की दक्षता एवं छात्र सहभागिता को बढ़ाने में, सूक्ष्म शिक्षण तकनीकी के अन्तर्गत पुनर्बलन कौशल, अनुशीलन कौशल, उद्दीपन परिवर्तन कौशल, उद्धरण युक्त दृष्टान्त कौशल के उपयोग पर आधारित प्रशिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना (2) सेवा कालीन विज्ञान- शिक्षकों की सामान्य शिक्षण दक्षता पर सूक्ष्म- शिक्षण तकनीकी के उपयोग से पाँचों शिक्षण कौशलों की प्रभाविता का अध्ययन करना। न्यादर्श के रूप में, हरियाणा के गुरगाँव एवम् साहेना ब्लाक के बी.एससी., बी.एड.योग्यता वाले कक्षा 9वीं शिक्षण स्तर के 11 पुरूष एवम् 7 महिला विज्ञान शिक्षकों का चयन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष थे- सूक्ष्म - शिक्षण के पाँचों कौशलों के उपयोग से विज्ञान शिक्षकों की दक्षता एवम् छात्र सहभागिता को बढ़ाने में प्रयुक्त प्रशिक्षण के पूर्व एवम् पश्च-परीक्षणों में सार्थक अंतर पाया गया।

यादव (1983) ने शिक्षण दक्षता एवम् छात्र-निष्पत्ति पर कक्षा-कक्ष प्रश्नोत्तर व्यवहार के साथ एवम् कक्षाकक्ष-प्रश्नोत्तर व्यवहार के बिना, दिये गये प्रशिक्षणों के शिक्षण दक्षता की तुलना करना। न्यादर्श के अंतर्गत 40 छात्राध्यापकों एवम् नवीं कक्षा के 811 विद्यार्थियों को लिया गया, जिसमें से 403 विद्यार्थियों को प्रायोगिक समूह में तथा 408 विद्यार्थियों को नियन्त्रित समूह में रखा गया। अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष था- छात्र अनुक्रिया प्रबन्धन व्यवहार एवम् शिक्षण दक्षता में सुधार लाने में प्रशिक्षण प्रभावी रहा।

नाईक (1984) ने सेवापूर्व छात्राध्यापकों की सामान्य शिक्षण दक्षता, छात्र-निष्पत्ति और छात्रों की उपलब्धि पर शिक्षक प्रशिक्षण के सूक्ष्म शिक्षण उपागम और पारस्परिक स्वीकृति प्रतिमानों के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था- छात्राध्यापकों की सामान्य शिक्षण दक्षता के सम्बन्ध में सूक्ष्म शिक्षण एवम् पारम्परिक स्वीकृति प्रतिमान के विभेदनात्मक प्रभाव का अध्ययन करना। आकस्मिक-उद्देश्यपरक एवम् बहुस्तरीय न्यादर्श विधि द्वारा आठवीं कक्षा के 620 विद्यार्थियों एवम् 644 छात्राध्यापकों का चयन किया गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष थे- (1) सामान्य शिक्षण दक्षता पर प्रायोगिक समूह के प्राप्तांक, नियन्त्रित समूह के प्राप्तांकों की

तुलना में सार्थक उच्च पाये गये। (2) भौतिक एवम् रसायन के उपलब्धि प्राप्तांकों के साथ, सामान्य शिक्षण दक्षता के प्राप्तांको का सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया; (3) भौतिक एवम् रसायन की निष्पत्ति प्राप्तांकों के साथ, सामान्य शिक्षण दक्षता के प्राप्तांकों का सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

शर्मा (1985) ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर स्वीकृति प्रतिमान के परिवर्तन के प्रभाव में प्रयोगात्मक अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था- छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता पर स्वीकृत प्रतिमान के प्रभाव को प्राप्त करना। लिंग एवं सामान्य शिक्षण दक्षता के अनुरूप दो समूहों में 11-11 छात्राध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष थे- (1) प्रशिक्षणार्थियों में शिक्षण दक्षता के विकास में निम्न उम्र स्तर का स्वीकृति प्रतिमान, मध्यम उम्र स्तर के स्वीकृति प्रतिमान की तुलना में अधिक प्रभावी पाया गया, (2) महिला प्रशिक्षणार्थियों में सूक्ष्म-शिक्षण के सम्बन्ध में धनात्मक प्रभाव विकसित करने में निम्न उम्र स्तर स्वीकृति प्रतिमान अधिक प्रभावी पाया गया; (3) सभी छात्राध्यपाकों ने उनके शिक्षण प्रभावों को ग्रहण किया; निम्न एवम् मध्य उम्र स्तर के स्वीकृति प्रतिमान के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सिंह और सिंह (1985) ने सूक्ष्म शिक्षण कार्यक्रम के क्रियान्वयन में जो समस्याऐं आती हैं उसकी पहचान की। प्राथमिक शिक्षण प्रशिक्षण उदाहरण के लिए एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा संचालित प्रोजेक्ट लिया जो रणनीति अपनाई वह शोधकार्य के लिए सहमंथनशैली थी। अध्ययन की बहुत ही महत्वपूर्ण खोज यह थी कि प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण स्तर पर सूक्ष्म शिक्षण का निर्वहन करने और क्रियान्वयन करने में कोई बड़ी कठिनाई नहीं थी और जो छोटी कठिनाई सामने आई उसे संस्थास्तर पर दूर किया गया। इस समूह में अध्ययन के परिणाम थेः- 1) भारतीय शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं में सूक्ष्म शिक्षण को बिना किसी बड़ी कठिनाई के सफलता पूर्वक क्रियान्वित किया जा सकता है। 2) सिर्फ सामान्य कौशल स्कूल विषयों के लिए उपयोगी है। सूक्ष्म शिक्षण प्रश्नों के लिए विचार किये जा सकते हैं। श्यामपटकार्य, व्याख्या, उद्दीपन परिवर्तन आदि प्रकार के कौशल हो सकते हैं। 3) सूक्ष्म शिक्षण के लिए जो शर्ते चुनी जा सकती है वे कौशल की प्रकृति पर निर्भर करती है। बी. एड. कालेजों में अभिरूपता की दशा में अभ्यास कर सूक्ष्म शिक्षण के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थी एवं शिक्षक प्रशिक्षक अनुकरणीय अभिवृत्ति प्रदर्शित करते हैं।

जंगीरा एवं अन्य(1986) ने सेवारत अध्यापकों की सामान्य शिक्षण दक्षता में सुधार के लिए सूक्ष्म शिक्षण का उपयोग पर अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष थे: 1) पाँच सूक्ष्म शिक्षण कौशलों का शिक्षण दक्षता के विकास में सार्थक प्रभाव था, 2) शिक्षकों के प्रशिक्षण के पश्चात् प्राप्त अंकों में शिक्षण दक्षता के संदर्भ में वृध्दि हुई, 3) प्रशिक्षण के पश्चात् शिक्षण दक्षता का विकास और सूक्ष्म शिक्षण को भी प्राप्त किया तथा 4) सभी अध्यापकों में व्यक्तिगत रूप से सामान्य शिक्षण दक्षता का सूक्ष्म शिक्षण के संदर्भ में विकास हुआ।

दवे (1987) ने एकीकरण कौशल के सूक्षम शिक्षण योगात्मक प्रतिमान व्यवहार एवं सामान्य शिक्षण दक्षता, शिक्षण अभिवृत्ति, छात्र पसंद एवं छात्र निष्पत्ति के पदों में लघु , शिक्षण प्रतिमान के प्रभावशील संबंधों का अध्ययन किया। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य था- सामान्य शिक्षण दक्षता के पदों में एकीकरण कौशल के योगात्मक प्रतिमान, लघु-शिक्षण प्रतिमान एवम् परम्परागत प्रतिमान के प्रभावों की तुलना करना। शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इन्दौर के 30 छात्राध्यापकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी द्वारा किया गया। न्यादर्श में 1982-83 एवं 1983-84 के शैक्षणिक सत्रों के 180

विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया। अध्ययन का मुख्य परिणाम था-

सामान्य शिक्षण दक्षता के पदों में, एकीकरण के लघु शिक्षण प्रतिमान का प्रभाव योगात्मक प्रतिमान एवम् परम्परागत प्रतिमान के प्रभावों की तुलना में श्रेष्ठ पाया गया।

राजामीनाक्षी (1988) ने भौतिकीय विज्ञान शिक्षण में, बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के प्रभावी घटकों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य थेः- (1) बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के प्रभावी घटकों की पहचान करना; (2) उचित उपकरण की मदद से बी.एड. छात्राध्यापकों की शिक्षण दक्षता का मूल्यांकन करना; (3) शिक्षण दक्षता एवम् विभिन्न घटकों के बीच विभेदनात्मक एवम् सहसम्बन्धात्मक अध्ययन स्थापित करना। न्यादर्श के रूप में तमिलनाडु के शिक्षा महाविद्यालयों के 610 बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवम् 1500 विद्यालयीन विद्यार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष थे- (1) छात्र-मूल्यांकन प्राप्तांक, उच्च स्तर पर (80-95) पाये गये, स्वमूल्यांकन प्राप्तांक 50- से 85 के बीच तथा बी.एड. विद्यार्थियों की शिक्षण दक्षता के प्राप्तांको की परिधि 45 से 65 प्राप्त हुई; (2) शिक्षण दक्षता बढ़ाने में प्रदर्शन एवम् सूक्ष्म शिक्षण कौशल के प्रशिक्षण का सार्थक प्रभाव पाया गया; (3) प्रशासन का प्रकार, बी.एड. पाठ्यक्रम का प्रवेश समय और शिक्षक-छात्र अनुपात के घटक हैं, जिनका तमिलनाडु के लगभग सभी शिक्षा महाविद्यालयों के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर प्रभाव पड़ता है; (4) महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थी जो कि कन्या-विद्यालयों में पढ़ी है; शिक्षक प्रशिक्षणार्थी; जो स्नातक स्तर पर प्रथम, श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हैं, प्रशिक्षणार्थी जिनके स्नातक-आर्थिक स्तर उच्च हैं; उनकी शिक्षण दक्षता, अन्य प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता की तुलना में सार्थक रुप से उच्च प्राप्त हुई तथा तीन मूल्यांकन विधियों से विश्लेषण के फलस्वरुप उम्र एवम् शिक्षण दक्षता के माध्य फलांकों में ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सिंह एवं जोशी (1990) ने भारत में सूक्ष्म शिक्षण एक व्यक्तित्व अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष थे: 1) सूक्ष्म शिक्षण से संबंधित विभिन्न संकल्पनात्मक एवं प्रायोगिक पक्षों पर चर्चा की जिसमें सूक्ष्म की परिभाषा, औचित्य, लक्षण आदि थे, 2) इसकी परिभाषा पर दो बिन्दु आते है जिसमें पहला शिक्षण के समुच्चय या व्यवहार और दूसरा परिकल्पनात्मक परीक्षण था, 3) शिक्षण कौशलों के गुण बहिर्मुखी से अंतर्मुखी के विरूद्ध थे तथा 4) कुछ व्यवहारों के समुच्चय में नामांकित करने में भ्रम की स्थिति है।

जयमानी(1991) ने कम्प्यूटर अनुदेशन की सहायता से सिमुलेशन शिक्षण प्रतिमान की प्रभाविता का अध्ययन किया। इसके निष्कर्ष थे: 1) प्रयोगात्मक समूह का माध्य नियंत्रित समूह से उच्च था, 2) लिंग के संदर्भ में कोई सार्थक प्रभाव नहीं है तथा 3) तमिल माध्यम और अंग्रेजी माध्यम विद्यार्थियों के अधिगम स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

गोर (1992) ने सूक्ष्म शिक्षण आव्यूह की प्रभाविता का प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के विकास का अध्ययन किया, जिसके निष्कर्ष थे- 1) प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के विकास में प्रत्यक्षणात्मक, आदर्शीकरण उपागम, सांकेतिक आदर्शीकरण उपागम से अधिक प्रभावी पाया गया। 2) प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के विकास में प्रत्यक्षणात्मक आदर्शीकरण उपागम, सांकेतिक आदर्शीकरण उपागम, परपंरागत उपागम से अधिक प्रभावी पाया गया। 3) शिक्षण व्यवसाय में रूचि एवं शिक्षण व्यवसाय की अभिवृत्ति पर सूक्ष्म शिक्षण सार्थक रूप से सूक्ष्म शिक्षण आव्यूह प्रभावी पाया गया। 4) प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में विशिष्ट सूक्ष्म शिक्षण कौशलो के विकास से सार्थक सुधार हुआ।

औचित्य : शिक्षा समाज की आधारशिला है। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होगी उसी प्रकार के समाज का निर्माण होगा अतः इस बात का सदैव प्रयत्न किया जाता है कि शिक्षा के उद्देश्य समाज के उद्देश्यों के अनुकूल हों लेकिन केवल सामाजिक कारण ही शिक्षा के लक्ष्यों या उद्देश्यों को प्रभावित नहीं करते बल्कि व्यक्ति, शिक्षार्थी, शिक्षक, माता-पिता, विद्यालयीन वातावरण, शिक्षण विधियाँ भी प्रभावित करती हैं।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर, शिक्षकों को दक्ष-शिक्षक बनकर कई चुनौतियों का सामना करना है। शिक्षक के प्रदर्शन क्षेत्र में अचानक वृद्धि हुई है जहाँ कक्षाकक्ष परिस्थितियों में अध्यापन को दक्ष बनाना है, विभिन्न शिक्षण आव्यूहों को प्रयोग में लाना है ताकि अधिगम के उच्चतम स्तर को प्राप्त किया जा सके। वहीं उसे पालक समाज, पालक एवं विद्यालय के मध्य उत्तम समन्वय भी स्थापित करना है। समय-समय पर विद्यालयीन एवं अंतरविद्यालयीन गतिविधियों के आयोजन एवं संचालन की भी उचित व्यवस्था करनी होगी, ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके। वह समाज एवं राष्ट्र के अनुरूप स्वयं को ढ़ाल सके। अध्यापकगण यदि अपने कार्य में दक्ष एवं प्रतिबद्ध है और यदि कक्षा समुदाय विद्यालय में अपनी भूमिका के निर्वहन में पेशेवर ढ़ंग से सक्षम है तो - वे सकारात्मक प्रभाव की एक श्रृंखला प्रक्रिया की शुरूआत कर सकते हैं।

शिक्षक जन्मजात ही नहीं होते, बनाये भी जा सकते है। कौशलों की उचित पहचान और उनके व्यवस्थित प्रशिक्षण के द्वारा योग्य शिक्षकों को तैयार किया जा सकता है सम्पूर्ण शिक्षण को छोटे-छोटे शिक्षण कौशलों में बांटना और फिर उनका वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर प्रशिक्षण प्रदान करना शिक्षण दक्षता लाने की दिशा में प्रयास है। एक योग्य शिक्षक आत्मविश्वासपूर्ण शिक्षण करेगा। शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया समाज के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक प्रणाली के रूप में अपनाई जाती है, जिसे समग्र रूप में शिक्षा प्रणाली कहते हैं। शिक्षा प्रणाली राष्ट्र की बौद्धिक और वैचारिक क्षमताओं को बढ़ाने का सबसे सशक्त माध्यम है और एक आत्मविश्वासपूर्ण राष्ट्र के लिए दक्ष शिक्षकों का होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षा शास्त्र की बी.एड़ पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या का निर्धारण भावी शिक्षकों के योग्य प्रशिक्षण की परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किया गया है। बी.एड. प्रशिक्षण के पाठ्यक्रमों के अन्तर्गत सूक्ष्म शिक्षण को एक मुख्य विषय के रूप में शामिल किया गया है। सूक्ष्म शिक्षण की आवश्यकता को केवल बी.एड. के पाठ्यक्रम तक ही सीमित नहीं किया जा सकता। इसकी महत्ता शिक्षण के सभी स्तरों की शैक्षणिक गतिविधियों में शामिल है।

निष्कर्ष

किसी भी स्तर का शिक्षण हो, सूक्ष्म शिक्षण में दक्षता सफल एवं आत्मविश्वास पूर्ण शिक्षण का मूलमंत्र है और ऐसा करने से शिक्षण न केवल प्रभावी होगा अपितु निर्धारित उद्देश्यों को अधिकतम स्तर तक प्राप्त करने में सहायक भी होगा। इन्ही भावनाओं को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के एकेडमिक स्टाफ कालेजों में संचालित ओरिएंटेशन कोर्स (दिशा निर्देशन पाठ्यक्रम) में सूक्ष्म शिक्षण की विधा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

उक्त वर्णित सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि सूक्ष्म शिक्षण के द्वारा सामान्य शिक्षण दक्षता एवं शिक्षण कौशलों में सुधार पाया गया। सभी अध्यापकों में व्यक्तिगत रूप से सामान्य शिक्षण दक्षता का सूक्ष्म शिक्षण के संदर्भ में विकास हुआ। संक्षेप में कहें, तो वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार गुणात्मक शिक्षा हेतु दक्षता आधारित एवं प्रतिबद्धता उन्मुख शिक्षण की आवश्यकता है। अतः सूक्ष्म शिक्षण कौशलों के प्रभाव के अध्ययन की आवश्यकता, महत्ता और उपयोगिता बढ़ जाती है।

संदर्भ ग्रंथ

1 Buch,M.B. (ed) ; Second survey of research in education (1972-78) Society for education research and development, Baroda
2 Buch, M.B. (ed) : Fourth survey of research in education (1983-88) Vol. I, N.C.E.R.T., New Delhi
3 Buch, M.B. (ed) : Fifth survey of research in education (1988-92) Vol. I & II, N.C.E.R.T., New Delhi
4 Buch, M.B. (ed) : Sixth survey of research in education (1993) Vol & II., N.C.E.R.T., New Delhi
6 अग्रवाल, लता ,सूक्ष्म शिक्षण एवं अधीनस्थ प्रशिक्षण., एच. पी. भार्गव बुक हाउस 2010
7 बिष्ट, आभारानी, प्रगत् शैक्षिक मनोविज्ञान., विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा.1957
8 भार्गव, महेश, आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन., एच. पी. भार्गव बुक हाउस, आगराः 1985
9 चौबे, सरयू प्रसाद, शिक्षा मनोविज्ञान., आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 1990
10 जोशी, अनुराधा, शिक्षण दक्षता एवं सूक्ष्म शिक्षण, आगरा, प्रिंट पैलेस 2005
11 कपिल, एच., सांख्यिकी के मूल तत्व.आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, 1992
12 कथूरिया, रामदेव प्रसाद, सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण प्रतिमान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर.2008
13 माथुर, सावित्री, सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षणकौशल. जयपुर, आस्था प्रकाशन 2007
14 पाल हंसराज, उच्च शिक्षा में अध्यापन व प्रशिक्षण की प्रविधियां, हिन्दी माध्यम निदेशालय.2000
15 पाठक, पी एवं त्यागी, एसः शिक्षा के सामान्य सिद्धांत., आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.1995
16 वर्मा, प्रीति, आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.1996
17 शर्मा, जे.डी., मनोविज्ञान की पद्धतियां एवं सिद्धांत, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर.1979
18 शर्मा, सरोज एवं गुप्ता, नंदिनी, कक्षाकक्ष तकनीकी एवं कक्षा-कक्ष प्रबंध, जयपुर, श्याम प्रकाशन. 2009
19 शर्मा, जी एवं अन्य, अधिगमकर्ता का विकास एवं प्रक्रिया. आगरा, एच.पी. भार्गव बुक हाउस 2005-06
20 शर्मा, प्रवीण, शिक्षा मनोविज्ञान एवं मनोविज्ञानिक परीक्षण.दिल्ली, शिक्षा प्रोडक्शन. 2010
21 शर्मा, एस, गोस्वामी एन, शिक्षण एवं अधिगम के सामाजिक आधार.जयपुर, श्याम प्रकाशन. 2009
22 शास्त्री, के.एन, अध्यापक शिक्षा.दिल्ली, प्रेरणा प्रकाशन. 2008
23 सिन्हा, बी.एवं अन्य, सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, नईदिल्ली, नेशनल पब्लिक हाउस, 1988
24 सिंह त्रिभुवन, शिक्षण एवं शिक्षणकौशलः जोनपुरः भारत भारती प्रकाशन. 1985